International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5, May - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

उच्चतर माधयमिक स्तर के केन्द्रीय माधयमिक स्तर के छात्र छात्रओं की व्यवसायिक रूची का तुलनात्मक अधययन

हिना क़ाज़ी,
डॉ. रज़ा खाँ
प्राचर्या रवि शंकर शिक्ष शिक्षण विद्यालय

सार तत्व

प्रस्तुत अधययन में यह जानने का प्रयास किया गया कि केंन्द्रीय माधयमिक बोर्ड के छात्र व छात्रओं की रूची में क्या अन्तर है शोधा हेतू भोपाल जिले के केन्द्रीय माधयमिक विद्यालय में कक्षा दस में अधययन छात्रें को न्यादर्श के रूप में चयन किया गया जिसमें २० छात्र व २० छात्रएं कुल ४० विधाार्थी थे अधययन से प्राप्त निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि विधाार्थी छात्र व छात्रओं की रूचियों में सार्थक अन्तर नहीं है बल्कि उनकी रूची समान है।

प्रस्तावना:

मानव व्यवहार में बहुत सी मानसिक प्रक्रियाएं होती है परन्तु व्यक्ति के व्यवहार बाहय क्रियाओ पर निर्भर होती है उन बाहय क्रियाओं का उसकी मानसिक स्थिति पर व व्यावहार पर बहुत प्रभाव पड़ता है वह उसी के अनुरूप प्रतिक्रियाएं करता है और अपनी पसन्द की चीजो को निर्धारित करता है उसे क्या अच्छा लगता है, क्या बुरा। उसके अनुभव भी उसकी पसन्द व नापसन्द को निर्धारित करने में सहायक होते हैं। इस प्रकार भिन्न भिन्न व्यक्तियों की पसन्द नापसन्द भी भिन्न होती है।

यह व्यक्ति की मानसिक क्रियाओं पर निर्भर करती है रूची की क्रियाओं को वह बारबार करता अरूची की क्रियाओं को करने से बचता है।

रूची को शाब्दिक रूप में सबंधा की भावना कह सकते है यह भावना से संबंधित हा व्यक्ति में अच्छी भावना है जैसे हम अक्सर लोगों को कहते है कि मुझे संगीत पसंद है या मेरी रूची हैं। रूची को परिभाषित करते हुए स्टाउट ने कहा है **intrest denotes the effective aspect of experience.**

बिंघम के अनुसार रूचि किसी अनुभव में लिप्त हो जाने तथा उसे चालू रखने की प्रवृत्ती है। एक प्रकार से पूर्व सुखद, दुखद अनुभवों द्वारा ही निर्मित होती है एक प्रकार से रूची व्यक्तित्व का एक अंग है।

व्यक्ति को सुगमता, सरलता या सुखद अनुभव उसके रूची निर्माण मे सहायक होते हैं।

सुपर की सर्व आधुनिकतम विचारधाारा यह है कि रूचियां जन्मजात न होकर अर्जित होती है और आदत और क्षमताओं की तरह इनका भी अर्जन किया जाता है।

रूची के प्रकार

रूची को निम्न चार भागों में विभाजित किया गया है

१ प्रदर्शित रूची
२ अभिव्यक्त रूची
३ प्रपत्रि रूची
४ परीक्षित रूची

प्रदर्शित रूची:

कुछ रूचियां ऐसी होती है जो शब्दो से नहीं व्यवहार द्वारा व्यक्ति प्रदर्शित करता है जैसे मा छोटे बच्चे के व्यवहार से समझ जाती है कि उसकी रूची किसमे है या कोई व्यक्ति किसी व्यवहार की बारबार प्रदर्शित करता हो तो वह प्रदर्शित रूची कह लाएगी।

अभिव्यक्त रूची:

जिन रूचियों को शब्दों से व्यक्त करत है जिनका ज्ञान हम पूछ कर लगा सकते है।

प्रपत्रि रूची:

जो रूची पत्र द्वारा या परीक्षणों के माधयम से पता लागया जाता है उसे प्रपत्रि रूची कहते हैं।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5, May - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

परीक्षित रूची:

जिस रूची को टेस्ट किया जा सके वह परीक्षित रूची कहलाती है।

नवीन युग में छात्र जीवन व शिक्षा के क्षेत्र में नित नये परिवर्तन हो रहे है स्पर्धा का क्षेत्र व्यापक होता जा रहा है ऐसे में प्रत्येक छात्र अपनी व्यक्तगत योग्याताओं क्षमताओं व रूचियों को यदि ज्ञात करले और उसके अनुसार आगे बढे तो स्पर्धा में भाग ले सकेगा व सफल हो सकेगा माधयमिक स्तर से ही छात्र जीवन में स्पर्धा नवीनता व स्वयं को सि) करने का युग प्रारभ हो जाता

है। एक और वह **अपनी** किशोरावस्था के **कारण** मानसिक **व** शारीरिक परिवर्तन से जूझ **रहा** होता है दूसरी और शिक्षा व भावी जीवन में सभावनाएं **व** सफलता प्राप्त करने से उसका मन भयभीत रहा है ज्ञान व जानकारी के अभाव में वह असमजस मे रहता है अपने विषय मे जानते और समझते के लिए उसकी

सहायता कौन करे ऐसे में वह स्वयं के निर्णय ले लेता है और बाद में परेशान होता है

ऐसे में परामर्श व निर्देशन की महत्वपूर्ण भूमिका सामने आई हो निर्देशन व परामर्श के प्रति भारत में बहुत जागरूकता बढी है माता पिता व स्वय छात्र भ अपने विषय में जानना चाहते है। तथा परामर्श प्राप्त करके ही आगे बढना चाहते है। विशेष रूप से कक्षा दस के पश्चात छात्रें को संकाय चयन करना होता है इस स्तर पर वे बहुत असमंजस की स्थिति में रहते है। क्या करेंं क्या न करें ऐसे यदि वह अपनी योग्यताओ क्षमताओ व रूचियों के विषय मे जान ले तो उनको सकांय चयन में बहुत सहायता मिलेगी और आगे बढने व भविष्य में अपनी रूची अनुसार कार्य करने मे व अधिक सफल होगे तथा उनके आत्मबल में वृ)ि होगी।

अधययन की आवश्यकता:

वर्तमान समय वैज्ञानिक यात्रिकी का समय हो इस कारण जीवन अधिक भौतिकवादी हो गया इन प्रबतियों के परिणाम स्वरूप परिवर्तन हो रहे हो छात्रें को बहुत अधिक ज्ञान स्त्रेत मिल रहे फलस्वरूप भ्रम उत्पन्न होना स्वभाविक है कि उनकी व्यक्तित्व किस प्रकार का हो तथा वे किस कार्य के लिए उपयुक्त हौ उनकी रूची क्या वह किस प्रकार अपने भावी जीवन के लिए निर्णय ले क्या उनके लिए ठीक हो क्या गलत। ऐसे में उनके मन मे अन्तदृद्व की स्थिति उत्पन्न हो जाती है और निर्णय लेने में असक्षम होते है ऐसे में यदि कोई उनको

निर्देशित करे या परामश प्रदान करे उससे उन्हे सहायता मिलेगी और वे सही निर्णय लेने में सक्षम होंगे।

उच्चतर माधयमिक स्तर पर विभिन्न पाठयक्रम होते है जैसे विज्ञान,कृषि,विज्ञान,तकनीकी,वाणिज्य ,मानविकि,गृह, विज्ञान, ललितकला आदि इससे विद्यार्थियों के समक्ष विषय चयन या संकाय चयन की समस्या उत्पन्न हो जाती है ऐसे में यदि वे अपनी रूची को जानते होंगे या समझते होंगे तो वह सही दिशा में अपने प्रयास कर पायेंगे और और सफल होगे अपनी योग्यता व क्षमता व रूची के अनुसार पाठयक्रम चयन करते से वे पूर्व में योजनाब) प्रबंधान करके विषय चयन करते से वर्तमान व भावी जीवन के निर्णयों में सुधार की संभावनाओं को बढ़ालेगें व सफलता की संभावनाएं भी बढेगी फलत: वे समाज व देश निर्माण में अपनी सक्रिय सहभागिता दर्ज करा सकेंगे।

उपयुक्त आवश्यकताओं को संज्ञान मे रखते हुए इस विषय पर अधययन करने की आवश्यकता को महसूस किया गया शोधार्थी का विश्वास है कि इस प्रकार के अधययन से प्राप्त निष्कर्ष व सुझाव प्रत्येक स्तर पर छात्रें की शैक्षिक उपलब्धाी विषय चयन में सहायक सि) होगी।

समस्या कथन:

उच्चतर माधयमिक स्तर के केन्द्रीय माधयमिक स्तर के छात्र / छात्रओ की तुलनात्मक व्यवसायिक रूची का अधययन

उच्चतर माधयमिक स्तर:

शिक्षा आयोग द्वारा उच्चतर माधयमिक स्तर से तात्पर्य शिक्षा आयोग द्वारा निर्धारित कक्षा दस ग्यारहवी व बारहवी के विद्यार्थियों से है

विद्यार्थी

कक्षा दस में अधययनरत छात्र छात्रएं से है

व्यवसायिक रूची:

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5, May - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

व्यवसायिक निर्देशन के लिए आवश्यक है कि उनकी रूचियों का ज्ञान हो भी छात्र अपनी रूची के अनुसार यदि कोई व्यवसाय का चयन करेगा तो स्फलता की सभावनाये बढ जायेगी सुपर ने रूचियों के विषय में बताया कि रूचियों जन्मजात अभियोग्यताओं व अतः सावी ग्रन्थियों से प्रभावित रहती है उसके अतिरिक्त वे

अवसरो सुविधाओं तथा समाजिक स्थिति से भी प्रभावित होती है।

व्यवसायिक रूची मापन के लिए स्ट्राग ने व्यवसायिक रूची परिसूची का निर्माण किया उसके प्रमाणीकरण में उनको पता चला कि जो व्यक्ति व्यवसाय में हो और जो नहीं हो उनकी रूचियों में कफी भिन्नताएं है।

स्ट्रॉग ने अपनी रूची प्रपत्र प्रश्नवाली में निम्न कुवियों का प्रयाग किया गणितज्ञ वकील भौतिकशास्त्री मनोवैज्ञानिक वास्तुकार पत्रकार रसायन शास्त्री दन्तचिकित्सक कलाकार अधयापक वाईएमसी सचिव सुपरिटेन्डैन्ट इत्यादि

कडर ने औद्योगित व्यवसायिक व्यक्तिगत आदि प्रथम बार १९५६ में रूचि मापन का इतिहास प्रारंभ हुआ जिसमें कडर की रूची प्रपत्र का भारतीकरण किया गया अपने प्रयोग के लिए शोधार्थी ने एम.एफ.आई.क्यू का भारतीयकरण प्रपत्र का प्रयोग किया है जिसमें मुख्यता व्यवसायिक क्लेरिकल, कृषि याफ्रिकी वैज्ञानिक, समाजिक बहय कलात्मक आदि पदों को रखा इस प्रकार व्यवसायिक निर्देशन हेतु व्यवसायिक रूची का ज्ञान होना आवश्यक है।

शोधा के उद्देश्यः

इस शोधा के उद्देश्य निम्नलिखित है

१. केन्द्रीय उच्चतर माधयमिक स्तर के विद्यार्थियों की रूची का अधययन करना
२. केन्द्रीय उच्चतर माधयमिक स्तर के छात्र व छात्रओं की रूची का तुलनात्मक अधययन करना
३. केन्द्रीय उच्चतर माधयमिक स्तर के विद्यार्थी की विभिन्न कारक जैसे वाजिणज्य, क्लेरिकल कृषि, मैकेनिक वैज्ञानिक, आउटडोर, एस्थेटिक, समाजिक, कारकों का तुलनात्मक अधययन करना

परिकल्पनाः

इस शोधा कार्य के लिए शोधार्थी ने निम्न लिखित परिकल्पनाओं का निर्माण किया है

परिकल्पना द्ध१ऋ कक्षा दस की विद्यार्थियों की व्यवसायिक रूची में कोई सार्थक अन्तर नहीं है

द्ध२ऋ केन्द्रीय माधयमिक विद्यालय की कक्षा दस की छात्रओं की रूची में कोई सार्थक अन्तर नहीं हो

द्ध३ऋ बहुकारक केन्द्रीय उच्च माधयमिक विद्यालय की कक्षा दस के छात्रें की बहुकारकीय रूचियों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है

द्ध४ऋ केन्द्रीय माधयमिक छात्रें व छात्रओं की व्यवसायिक, क्लेरिकल, मैकेनिकल एग्रीकल्चर साइंटफिक ऐसथेटिक सोशल आदि में रूचियां में सार्थक अन्तर नहीं है।

न्यादर्शः

प्रस्तुत शोधा के न्यादर्श का चुनाव उद्देश्य पूर्ण विधि द्वारा किया गया है न्यादर्श के रूप में कमला नेहरू उच्चतर माधयमिक विद्यालय कमला नगर भोपाल के कक्षा दस के चालीस छात्रें को चयन किया गया जिसमें बीस छात्रएं व बीस छात्रें का चयन किया गया।

परीसीमनः

शोधा की सीमायें निम्नलिखित है।

१. यह अधययन केवल केन्द्रीय माधयमिक विद्यालय के विद्यार्थियों तक सीमित है
२. यह अधययन केवल कमला नेहरू हा. से. विद्यालय के कक्षा दस के विद्यार्थियों तक ही सीमित है

आंकडों का संकलनः

इस शोधा का उद्देश्य कक्षा दस में अधययनरत विद्यार्थियों की रूची का अधययन करना था इसके लिए रूची प्रशनावली का प्रयोग किया गया।

एम.एफ.आइ.क्यू बहुकारकीय रूची प्रश्नावली छात्रें से भरवाकर आंकडो का संकलन किया गया

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5, May - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

क्षेत्र	समूह	संख्या	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी सारणीमान	परिकलित टी-मान	सार्थकता स्तर
ठनेपदमे	केन्द्रीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र	20	4ण60	2ण34	2ण02	ण088	असार्थक
	केन्द्रीय उच्चतर माध्यमिक स्तर की छात्राएं	20	4ण55	ण998			
ब्समतपबंस	केन्द्रीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र	20	3ण60	1ण31	2ण02	1ण51	असार्थक
	केन्द्रीय उच्चतर माध्यमिक स्तर की छात्राएं	20	4ण20	1ण19			
।हतपबनसजनतम	केन्द्रीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र	20	3ण85	2ण32	2ण02	ण920	असार्थक
	केन्द्रीय उच्चतर माध्यमिक स्तर की छात्राएं	20	4ण45	1ण76			
डमबींदपबंस	केन्द्रीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र	20	5ण15	2ण45	2ण02	ण193	असार्थक
	केन्द्रीय उच्चतर माध्यमिक स्तर की छात्राएं	20	5ण00	2ण47			
बपमदजपपिब	केन्द्रीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र	20	6ण10	1ण80	2ण02	1ण32	असार्थक
	केन्द्रीय उच्चतर माध्यमिक स्तर की छात्राएं	20	5ण25	2ण24			
व्नजकववत	केन्द्रीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र	20	6ण25	1ण68	2ण02	ण830	असार्थक
	केन्द्रीय उच्चतर माध्यमिक स्तर की छात्राएं	20	5ण85	1ण34			
।तजपेजपब	केन्द्रीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र	20	4ण80	1ण60	2ण02	1ण92	असार्थक
	केन्द्रीय उच्चतर माध्यमिक स्तर की छात्राएं	20	5ण95	2ण13			
वबपंस	केन्द्रीय उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र	20	5ण55	2ण68	2ण02	1ण72	असार्थक
	केन्द्रीय उच्चतर माध्यमिक स्तर की छात्राएं	20	6ण85	2ण03			

छात्र व छात्राओं के बिजनेस विषय में रूची के प्राप्तांकों के मधयमान अन्तर की तुलना करने पर ज्ञात होता है कि छात्र/छात्राओं के मधयमान क्रमश ४.६० एवं ४.५५ है इस प्रकार छात्रें के मान छात्रओं से अधिक है तालिका को देखने से स्पष्ट होता है कि परिकलितटी मान .००८ है जबकि सारणी मान २.०२ है इस प्रकार परिकलित टी मान कम है अतः परिकल्पना कि छात्र व छात्रओं की

बिजनेस विषय की रूची में कोई सार्थक अन्तर नहीं है स्वीकृत होती है

इसी प्रकार क्लेरिकल विषय में छात्र/छात्रओं के मधयमान क्रमशः ४.२० एवं ३.५ है जो छात्रओं का मधयमान छात्रें से कम है परिकलित टी मान .९२० है जो सारणीमान २.०२ से कम है अर्थात शून्य परिकल्पना कि छात्र व छात्रओं की क्लेरिकल रूची में सार्थक अन्तर नहीं है अस्वीकृत होती है अर्थात छात्र व छात्रओं की क्लेरिकल विषय की रूची में अन्तर नहीं है।

ऐसे ही एग्रीकल्चर विषय में छात्र एवं छात्रओं के मधयमान क्रमशः ३.८५ एवं ४.४५ है जिसमें छात्रओं का मधयमान छात्रें से कम है परिकलित टी मान .९२० है जो. कम है अर्थात परिकल्पना उच्चतर माधयमिक स्तर के छात्र/छात्रओं की एग्रीकल्चर विषय की रूची में सार्थक अन्तर नहीं है स्वीकृत होती है अर्थात उनकी रूची में कोई अन्तर नहीं है।

मैकेनिकल विषय में छात्र व छात्रओं की रूची के मधयमान क्रमश ५.१५ एवं ५.०० है जो छात्र का छात्रओं के मधयमान से अधिक है इसी प्रकार परिकलित टी मान .९१३ है जो सारणीमान २.०२ से कम है अर्थात निर्धारित शुन्य परिकल्पना केन्द्रीय माधयमिक स्तर के छात्र व छात्रओं की मैकेनिकल विषय की रूची में कोई सार्थ अन्तर नहीं है अस्वीकृत होती है अर्थात छात्र व छात्रओं की मैकेनिकल विषय की रूची में कोई अन्तर नहीं है।

सांइटिफिक विषय में छात्र व छात्राओं की रूची के मधयमान क्रमशः ६.१० एवं ५.२५ है सिमे छात्रओं के मान छात्रें से कम है व परिकलित टी मान १.३२ जो सारणी मान २.०२ से कम है अतः परिकल्पना द्5ऋ केन्द्रीय माधयमिक स्तर के छात्र व छात्रओं की वैज्ञानिक सांइटिफिक विषय की रूची में सार्थक अन्तर नहीं है अस्वीकृत होती है अर्थात छात्र व छात्रओं की सांइटिफिक विषय की रूची में कोई अन्तर नहीं होता है।

इसी प्रकार आउट डोर में छात्र व छात्रओं के मधयमान क्रमशः ६.२५ एवं ५.८५ है जो छात्रओं के मान समान ही है ऐसे ही परिकलित टी मान .८३० है वह सारणी मान २.०२ है इस प्रकार

आउट डोर विषयों में छात्र व छात्रओं की रूची असार्थक है उसमें कोई अन्तर नहीं है।

इसी प्रकार सोशल विषय में छात्र व छात्रओं के मधयमान कमशः ५.५५ एवं ६.८५ इसमें छात्रओं मधयमान थोड़े अधिक है परिकलित टी मान १.७२ है अर्थात ०.५

सार्थकता स्तर पर देखते से ज्ञात होता है कि छात्र व छात्रओं की सोशल विषय की रूची में असार्थक अन्तर है अथात कोई अन्तर नहीं है।

साख्यकीय विश्लेषण

प्रस्तुत शोधा के विश्लेषण हेतू प्रमाण विचलन, मधयमान, रीमान का प्रयोग किया गया है।

व्याख्या एवं निष्कर्षः

व्यिक्ति की रूची उसके व्यक्तित्व व व्यवहार का प्रदर्शन है विशेष रूप से विषयों में रूची उसके विषय चयन को प्रभावित कर सकती है रूची कई प्रकार की हो सकती है यहा पर विशेष यप से व्यवसायिक रूची की चर्चा कर रहे हैं। प्रस्तुत शोधा मं यह देखा गया कि विभिन्न विषय जैसे बिजनेस क्लेरिकल, एग्रीकल्च, मैकेनिकल साइटिफिक, आउटडोर, एस्थेटिक, सोशल आदि विषयों में छात्र व छात्रओं की रूचो किस प्रकार एक दूसरे से भिन्न है विश्लेषण में ज्ञात हुआ कि छात्र व छात्रओं की सभी विषयों की रूचिों में असार्थक अन्तर है अर्थात कोई अन्तर नहीं है अतः छात्र व छात्रओं को अपने विषयों की रूची का ज्ञान उनको विषय चयन करने में उनकी सहायता करेगा अतः छात्र व छात्रओं को विषय की रूचियों ज्ञान उनको बहुत सहायता करेगा जिससे उनको भविष्य में आगे बढने करियर चयन करने में उनका मार्गदर्शन होगा तथा उनकी अकादमिक उपलब्धा पर भी इसका प्रभाव पडता है।छात्र/छात्रओं के विचार व रूचियों में कोई अन्तर नहीं है।

उच्चतर माधयमिक स्तर पर रूचियों का ज्ञान व स्वजागरूक बनाने हेतु कुछ सुझाव

१. प्रत्येक विद्यालय में परामर्शदाता का होना आवश्यक है
२. कक्षा दस में यदि छात्रें को स्व रूचि का ज्ञान होगा तो वे कक्षा ग्यारह में सरलता से विषय चयन कर सकेगा
३. विद्यार्थियों के लिए व्यवसायिक रूची का ज्ञान होना चाहिए
४. विद्यार्थियों के लिए कुछ जागरूकता कार्यक्रम सरकार व विद्यालयों को समय-समय पर कराना चाहिए।
५. विद्यार्थियों की रूची के आधार पर विषय चयन के लिए परामर्श व मार्गदर्श प्रदान किया जा सकता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5, May - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सन्दर्भः

बख्शी जे. ए. २०११ पोस्ट एडोलसेंट एन टू एंड अक्रास एडल्टहुड करियर क्राईसेस एंड मेजर डिसीजनस इन्टरनेशनल जनरल ऑर एजुकेशनल एंड वोकेशनल गाइडेंस द्ध पृष्ठ. क.११.१३९.१५९ऋ

ग्रेवाल एस. के. २००४ जॉब स्ट्रेस जॉब सेटिस्फेक्शन एडज स्टमेंट एण्ड इन्ट्रेस्ट आफ टीचर एजूकेटर्स एज रिलेटेड टू दयरे जॉब प्लेसमेंट पीएच डी. शोधा पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ

रस्तौगी आर. के. २००५ मनोविज्ञान मे सांख्यिकी संजीव प्रकाशन

राजीव डाली द्ध२००४ऋ उच्चतर माधयमिक छात्रे व छात्रओं की व्यवसायिक रूचि का प्रेरणा व एसपीरेशन से संबंधा का अधययन करना था।

सिंह रामपाल एवं उपधयाय राधाावल्लय २००४ शैक्षिक एवं व्यवसायिक निर्देशन

मोहन स्वदेश १९९९ प्रथम संस्करण करियर डेवलपमेंट इन इण्डिया विकास पब्लिकेशन हाउस पृष्ठ क्र. द्ध१-२१ऋ द्ध५३.१०३ऋ